NJESR/May-2023/Volume-5/Issue-5 **E-ISSN-2582-5836**
DOI-10.53571/NJESR.2023.5.5.1-9

मोहन राकेश की जीवन दृष्टि एवं उनके नाटकों का कथ्य विश्लेषण

संगीता झगटा

सह आचार्या, हिन्दी विभाग

राजकीय कन्या महाविद्यालय, शिमला – 01

(Received:10April2023/Revised:20April2023/Accepted:2May2023/Published:08May2023)

भूमिका :–

हिन्दी रंगमंच को राकेश की महत्त्वपूर्ण देन है। एक ओर तो मैं इस विश्लेषण द्वारा मोहन राकेश की महत्त्वपूर्ण भूमिका को याद करना चाहती हूँ तथा दूसरी तरफ कतिपय अन्य तथ्यों की ओर संकेत भी। शताब्दियों से जड़ और संवेदनशून्य हो गए हिन्दी रंगमंच में फिर से नई चेतना का संचार करने में, नाटकों को रंगमंच से जोडकर नाटक के सही अर्थों एवं सन्दर्भों में प्रतिष्ठित करने की दिशा में, रंगमंच की पृष्ठभूमि में नाटककार की भूमिका निश्चित करने में, राकेश का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

आज के उन्नत और समृद्ध होते जा रहे रंगमंच की शुरूआत जिन परिस्थितियों में हुई उन्हें क्रमशः 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' और 'आधे–अधुरे' में मौजूद देख सकते हैं। आज का भावुक समीक्षक कह सकता है कि हिन्दी रंगमंच को इस रूप में गढ़ने वाले रंगशिल्पी मोहन राकेश थे।

अपने नाटकों के द्वारा मोहन राकेश ने रंगमचीय कौशल को उन्नत बनाया, इसलिए उन्हें रंगशिल्पी स्वीकार करने का अपना औचित्य है। मोहन राकेश पहले ऐसे नाटककार थे जिन्होंने अपने प्रत्येक नाटक के लिए रंगमंच की स्थापना की। उनका हर एक नाटक अपना रंगमंच स्वयं साथ लेकर जन्मता है। मोहन राकेश हिन्दी के गिने–चुने श्रेष्ठ नाटककारों में से एक है। इसका कारण यह है कि उन्होनें शिल्प और कथ्य के धरातल पर नये प्रयोगशील आकर्षक नाटक लिखे, जिससे काव्यात्व रंगमंच की आभा के समक्ष इनके नाटक कहीं भी फीके नहीं पडे। माथुर के पश्चात् मोहन राकेश शायद प्रथम ऐसे नाटककार प्रमाणित होते हैं, जिन्होनें कथ्य को दृश्यत्व प्रदान करने की आवश्यकता और अनिवार्यता समझी। इन्होनें परम्परा से हटकर एकदम परे नये शिल्प, शैली और भावबोध के नाटक प्रस्तुत किए थे।

मोहन राकेश ने अपने नाटकों में ऐतिहासिक घटनाएं नहीं ली, परंतु इतिहास से केवल पात्र लिए, वह भी जो नाटक के लिए आवश्यक थे। 'आषाढ़ का एक दिन' में कालिदास एकमात्र ऐतिहासिक पात्र और 'लहरों के राजहंस' में नन्द एवं सुन्दरी। इन पात्रों के जीवन में घटने वाली घटनाएं, परिस्थितियाँ, उनकी प्रतिक्रियाएं, उनकी मानसिकता, उनका आंतरिक द्वंद्व और संघर्ष आदि सब कुछ मोहन राकेश का अपना था। इन्होनें अपनी रचनाओं द्वारा पात्रों का एक अलग इतिहास गढा है।

मोहन राकेश के नाटकों में दृश्यत्व का तत्व भले ही नाटक में कमजोर हो, परंतु अगले दोनों नाटकों में यह कमी कहीं भी खटकती नहीं है। इस दृष्टि से मोहन राकेश समकालीन हिन्दी नाटककारों में सर्वाधिक उल्लेखनीय हो जाते है।

इन्होंने हिन्दी नाटकों को प्रौढ़ता के उच्चतम शिखर पर पहुंचाया है और सामाजिक नाटकों की परम्परा में मोहन राकेश की भूमिका काफी महत्वपूर्ण कही जा सकती है। इस संदर्भ में 'आधे–अधूरे' नाटक का विस्तृत विवेचन आगे चलकर किया जा रहा है। इनके अंतिम दोनों नाटक यथार्थवादी दृश्यबंध नाटक की आंतरिक जरूरत से उपजे हैं।

रंगमंच के संदर्भ में मोहन राकेश की सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका यह कही जाएगी कि इनके नाटक रंगमंच की जरूरत के मुताबिक आकार ले लेते हैं, यद्यपि नाटक यथार्थवादी है इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि मोहन राकेश ने पहले ही दृश्यबंध की कल्पना कर ली थी और उसके अनुरूप घटित हो सकने वाली घटनाओं का निर्माण किया था। उन्होंने नाटक के माध्यम से रंगमंच को निर्मित करने का प्रयास किया है। इनके नाटकों से यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि किस प्रकार वह नाटकों के माध्यम से अपनी बात अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकते थे। यह कहा जा सकता है कि इनके नाटकों का कथ्य मूर्तरूप ग्रहण करता है।

नाटक और रंगमंच की अभेद्यता सिद्ध करने में मोहन राकेश की भूमिका निर्णायक कही जाएगी। आज नाटक किसी विशिष्ठ वर्ग की वस्तु नहीं, इसलिए नाटक विशेष वर्ग के लिए न होकर सभी स्तर एवं वर्ग के दर्शकों का ख्याल रख कर लिखे जाने चाहिए, अन्यथा नाटक विशेष वर्ग के दर्शकों तक ही सीमित हो जाएंगे।

रंगमंच पर 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक सभी वर्ग के दर्शकों को प्रभावित करने में सफल रहा। इसके बाद 'लहरों के राजहंस', 'आधे–अधूरे' दो और नाटक मोहन राकेश ने रचे। 'आधे–अधूरे' तो पूरे मध्यम वर्ग के दर्शकों पर छा गया। इनके पहले नाटक से साहित्यिक रूचि के दर्शकों को, दूसरे नाटक ने बुद्धिजीवियों को और तीसरे नाटक से मध्यम वर्ग को मोहन राकेश ने धीरे–धीरे रंगमंच से जोड़ा। यदि वे कुछ समय और जीवित रहते तो आज हिन्दी नाटक का स्वरूप कुछ और होता।

नाटक के शिल्प पक्ष को लेकर भी राकेश ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसकी वास्तविक बुनियाद इन्होंने ही डाली थी। हिन्दी नाटकों को आधुनिक प्रयोगशील स्वरूप के निर्माण में भी राकेश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मंचीय सफलता ही नाटक रचना की अंतिम सफलता है। परंतु मंचीय सफलता का आशय भी दर्शकों की भीड़ और उस नाटक के बारम्बार प्रदर्शन की मांग से जोड़ कर देखा जाने लगा, जिससे नाटक रचना का सौंदर्यबोध और कथा मूल्य खंडित होने लगा।

मोहन राकेश प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अपनी सभी रचनाओं में कहीं न कहीं और किसी न किसी रूप में धरातल पर अवश्य जुडे हुए मालूम होते हैं। राकेश के तीनों नाटकों को पढ़कर, समझकर एवं रंचमंचीयता देखकर इस बात को भली–भांति समझा जा सकता है कि राकेश नाटक परंपरा में अपना महत्वपूर्ण स्थान निर्धारित करने में पूर्ण सफल रहे हैं।

मोहन राकेश की जीवन दृष्टि एवं व्यक्तित्व

5 जनवरी, 1925 को जन्मे और 1972 को महाप्रयाण की यात्रा पर चल देने वाले मोहन राकेश आधुनिक साहित्य की मानवीय संवेदना के जागरूक कलाकार थे। गद्य साहित्य की विविध विधाओं में उन्होंने अपनी लेखनी का चमत्कार इतनी शीघ्रता से दर्शाया कि अपनी मौलिक सर्जनात्मकता से आधुनिक हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा ही प्रदान कर दी और नाटकों के क्षेत्र में वे मसीहा कहे गए।

जयदेव तनेजा का यह कथन सार्थक सिद्ध होता है कि, "यदि जीवन के प्रति आगाध–अटूट आस्था और मानव–जीवन की अपूर्णता के भीतर से संपूर्णता को पाने की अंतहीन तालाश को कोई सार्थक नाम दिया जा सकता है तो वह नाम है – मोहन राकेश।"

मोहन राकेश का समूचा जीवन संघर्षों में ही व्यतीत हुआ। यह संघर्ष उनके कृतित्व में एक तीखी संवेदना जगाता है और इसी के भीतर हमें युग के बदलते हुए तेवर भी दिखाई देते है। राकेश की सृजनात्मकता ने उन्हें कहीं भी टिकने नहीं दिया परंतु सच तो यह है कि राकेश के स्वतंत्र चितंन ने किसी बंधन को कहीं पर भी स्वीकार नहीं किया।

मोहन राकेश का नाम हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उन साहित्यकारों के साथ जोड़ा जाता है, जिन्होंने अपनी बहुआयामी प्रतिभा द्वारा उत्कृष्ट साहित्य का निर्माण किया है। नाटक, उपन्यास, कहानी, एकांकी, निबंध, यात्रा, संस्मरण जैसे विविध क्षेत्रों में कलम चलाकर इन्होंने सामाजिक लोक जीवन को संवेदनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की।

मोहन राकेश जितने सफल कथाकार हैं उतने ही सफल निबंधकार भी। लेकिन नाटककार के रूप में वह अधिक प्रसिद्ध हुए। इनके नाटकों में आज के मानव की द्वन्द्वात्मक स्थितियों का यथार्थ अंकन तो है ही उनके नाटकों के पात्र भी सर्वत्र इसी तनावपूर्ण स्थिति और टूटन को वहन करते हुए चले जाते हैं फिर चाहे वह 'आषाढ़ का एक दिन' का कालिदास हो अथवा 'लहरों के राजहंस' का नन्द सभी में एक प्रकार की तनावपूर्ण स्थिति है। 'आधे–अधूरे' को लेकर तो नाटक और ज्यादा खुला नजर आता है। आज का मनुष्य जैसे पूर्ण है ही नहीं, वह खण्ड–खण्ड है। हम सभी जैसे आधे–अधूरे हैं। मोहन राकेश हमेशा हमारी संवेदनाओं और भावनाओं को झकझोरते रहते हैं।

मोहन राकेश का समूचा जीवन इधर–उधर व्यतीत हुआ। उनकी सृजनात्मक वृत्तियों ने कहीं भी उन्हें एक स्थान पर टिकने नहीं दिया। वे लाहौर से जांलधर, जांलधर से बम्बई, दिल्ली से शिमला न जाने कितने स्थान और कितनी नौकरियां बदलते रहे। उनकी व्यैक्तिक रूचियों का प्रतिफलन उनके साहित्य में स्पष्टतः देखा जा सकता है।

मोहन राकेश का व्यक्तित्व बाहर से आत्म केन्द्रित–सा प्रतीत होता था। किन्तु अंतःपक्ष उतना ही उदार है। नये व्यक्ति को उन्हें देखकर कुछ क्षणों तक असमंजस सा हो सकता था, लेकिन बाद में राकेश की आत्मीयता उस स्थिति को नया से महसूस नहीं होने देती थी। उनका पारिवारिक जीवन संघर्ष के दायरे में पला। वह लेखक की मस्ती में जीया और मस्तमौला बनकर भविष्य की चिंताओं से सदैव मुक्त रहा। राकेश के इसी स्वभाव ने उनके जीवन में अनेक तूफान, ठोकरें खाने की परिस्थितियाँ पैदा की। नेकी और ईमानदारी भरी जिन्दगी की तलाश में उन्होंने धोखा खाया, भावुकता के आवेश में उन्हें बार–बार दुःखी होना पड़ा और फिर भी भावुकता का दामन नहीं छोड़ा। अपनी चिंता किए बिना औरों के जख्मों पर मरहमपट्टी लगाते रहे और उनकी यह अदम्य शक्ति उन्हें जीवन और सृजन की शक्ति देती रही है। भावुकता के ऐसे विविध बोध उनकी रचनाओं में सर्वत्र मिलेगें।

मोहन राकेश का कृतित्व

मोहन राकेश ने सभी गद्य विधाओं पर लेखनी चलाई और सफलता भी उन्हें प्राप्त हुई थी। इनके कृतित्व की संक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती हैः–

उपन्यासकार के रूप में – आधुनिक उपन्यास के क्षेत्र में राकेश एक नवीन दृष्टि लेकर अवतरित हुए। उनके उपन्यासों में हमें आधुनिक जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। इनमें आधुनिक नगर चेतना का बोध पहली बार मुखरित हुआ। स्त्री

पुरूष के संबंधों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी इनके उपन्यासों की विशेषता है। 'अंधेरे बंद कमरे', 'अंतराल' और 'न आने वाला कल' इनके प्रसिद्ध व चर्चित उपन्यास माने जाते हैं।

कहानीकार के रूप में – उपन्यासकार की अपेक्षा राकेश की लेखनी कहानीकार के रूप में अधिक सशक्त रही है। इन्होंने 'नई कहानी' को एक नई दिशा दी और प्रेमचन्द की कहानी परंपरा को तोड़े बगैर एक नया घुमाव अपनी कहानियों को दिया। इनके प्रमुख कहानी संग्रहों में – 'इंसान के खण्डहर', 'नए बादल', 'जानवर और जानवर', 'चेहरे' आदि विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। नए दौर की इन कहानियों में वस्तुतः मानवीय सम्बन्धों की यन्त्रणाओं को झेलने वाले वे पात्र हैं, जो अक्सर अपने अकेलेपन से पीड़ित हैं। राकेश का हर पात्र सामाजिक विड़म्बना और यन्त्रणा का आईना बनकर आता है।

निबंधकार के रूप में – मोहन राकेश के निबंध खासकर नई कहानी और नाटक के दर्शन पक्ष को उद्घाटित करने में विशेष रूप से सफल हुए हैं। इनके मुख्य निबंध संग्रहों में 'रंगमंच और शब्द', 'परिवेश' और 'कुछ और अस्वीकार' आदि है।

नाटककार के रूप में – मोहन राकेश को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि नाटककार के रूप में मिली। इन्होंने कुल चार नाटक लिखे– तीन पूरे और एक नाटक अधूरा है जो इस प्रकार हैं – 'आधे–अधूरे', 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' और 'पैर तले जमीन'। 'पैर तले जमीन' अधूरा नाटक है जिसे बाद में कमलेश्वर ने टिप्पणियों के आधार पर पूरा किया। इनके नाटक प्रसाद के नाटकों से काफी भिन्न हैं। प्रसाद के नाटक अपनी साहित्यिक मूल्यवता के बावजूद रंगमंच पर सफल नहीं थे जबकि राकेश के नाटक दोनों दृष्टियों से सफल नाटक थे। इनकी इस सफलता का कारण नाटक और रंगमंच सम्बन्धित सोच थी। राकेश के सभी नाटकों की सैकड़ों प्रस्तुतियां प्रख्यात निर्देशकों द्वारा सफलतापूर्वक की गई है। इन्होंने आधे–अधूरे नाटक को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लिखा जिसका कथानक मध्यम वर्ग के जीवन से जुड़ा है जिसमें शहरी मध्यवर्गीय परिवार की कहानी कही गई है। जो धीरे–धीरे टूट रहा है। राकेश ने इस नाटक में स्त्री और पुरूष के संबंधों की पड़ताल भी की है। नाटक की सफलता रंगमंच पर प्रदर्शन से सिद्ध होती है। इस दृष्टि से मोहन राकेश हिन्दी के पहले सफल नाटककार हैं, जिनके सभी नाटक रंगमंच पर अत्यन्त सफलतापूर्वक खेले जा रहे हैं।

अन्य रचनाएँ

'आखिरी चट्टान तक', 'पतझड़ का रंगमंच', राकेश के श्रेष्ठ यात्रा–वृतान्त हैं, जबकि संस्कृत से हिन्दी में इन्होंने 'शाकुन्तल' और 'मृच्छकटिका' जैसे नाटकों का सफल अनुवाद भी किया है।

नाटकों में कथ्य से अभिप्राय

किसी भी नाट्य रचना के लिए कथानक हो, यह आवश्यक है पर कथा भी हो यह आवश्यक नहीं है। एक जीवन स्थिति का निर्माण यदि पूर्ण जीवंन्ता के साथ कर दिया जाए तो वही कथ्य या कथानक है। नाटक चुंकि लोक अनुरंजन की वस्तु है, इसलिए नाटकों में कथानक एक कथा का आधार लेकर तैयार किया जाता है। कथा छोटी है या बड़ी यह मुख्य नहीं है, मुख्य बात यह है जो कथानक में ली जाती है। इस कथा में जीवन सत्यों का साक्षात्कार करने की क्षमता होनी चाहिए।

मोहन राकेश के नाटकों में कथ्य विश्लेषण

मोहन राकेश ने अपने नाटकों में वर्तमान की अभिव्यक्तियों को मुखर किया है। उन्होंने घटना के परिवेश या वातावरण को रंगनिर्देशों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। स्थूल अर्थों में इसे ही रंगमंच कहा जाता है। रंगमंचीय प्रयोग के द्वारा ये प्रतीक नाटक के इसी अर्थ को खोलते हैं।

'आषाढ़ का एक दिन' में कथ्य विश्लषण

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में एक कथा है– कालिदास और मल्लिका की प्रेम कथा, प्रेम और आत्म बलिदान की कथा, एक कलाकार की आत्मयातना की कथा या कुछ और। इस नाटक में नाटककार ने इतिहास से सिर्फ पात्र लिए हैं, इसलिए नाटक जिस वातावरण का निर्माण करता है आवश्यक है कि वह विश्वसनीय हो। नाटक में प्रयुक्त तत्सम शब्द और कालिदास की रचना से उद्धृत पंक्तियां इसमें सहायक होती है। नाटक में कथा का विकास तीन अंकों में होता है। कथ्य के अंतर्गत आने वाली सारी घटनाएं एक ही स्थल पर, मल्लिका के निवास पर घटित होती है।

प्रथम अंक में कालिदास हमारे समक्ष मानवीय संवेदनाओं से पूर्ण भावुक, कल्पनाशील, प्रतिभाशील, निर्धन कवि एवं प्रेमी के रूप में उपस्थित होते हैं। राज्य कर्मचारी दन्तुल के बाण से आहत एक मृग–शावक को गोद में लिए करूणा से आर्द्र स्वरों में मल्लिका के पास उस मृग–शावक की सुश्रृषा के लिए आते हैं। उस समय मृग–शावक और स्वयं में कालिदास को कोई भेद प्रतीत नहीं होता। कालिदास शावक की व्यथा को अपनी व्यथा के रूप में अनुभव करता है। वह प्रेम और सौंदर्य के सच्चे पुजारी हैं। प्राकृतिक सौंदर्य और मल्लिका का प्रेम उनके हृदय की संपत्ति है। यही कारण है कि कालिदास इतने बड़े सम्मान की अवहेलना कर देते हैं।

वे दूरदर्शी और महान् सर्जक होने के साथ–साथ मानसिक दुर्बलता से पीड़ित भी हैं। वे अति सुख की कल्पना से भी घबरा उठते हैं। नाटककार ने उनका चरित्र–चित्रण साधारण व्यक्ति की श्रेणी में रखकर ही किया है। उनकी मानसिक दुर्बलता ही उन्हें सहज मानव के रूप में प्रतिष्ठित करती है। मल्लिका का प्रेम ही कालिदास का सर्वस्व है। अतः मल्लिका से अलग होकर भी वह उसे एक क्षण के लिए भी नहीं भूल सके। प्रियंगुमंजरी से विवाह करने के बाद तथा कश्मीर पर अधिकार करने पर भी वे मल्लिका के लिए, उनके प्रेम के लिए छटपटाते हैं।

अंतिम दृश्य में वे जबकि मल्लिका से मिलने के लिए आते हैं तो उनका हृदय वर्षों की घुटन से मानों मुक्त होना चाहता है। वे कहते है कि "आज में उन सब से मुक्त हूँ जो वर्षों से मुझे कसता रहा है।" कालिदास की कविता का आधार भी मल्लिका है। मल्लिका ही वह प्रेरणा है जिसने कालिदास की कलम से ऋतुसंहार, मेघदूत, रघुवंश जैसे महाकाव्यों की रचना करवा दी। मल्लिका वस्तुतः कवि की धड़कन बन कर अवतरित हुई और कालिदास के विविध नारी पात्रों में समा गई। उससे हटकर जब भी कवि ने लिखना चाहा उसकी कलम रूक गई और कविता निष्प्राण बनकर रह गई। कालिदास भारतीय संस्कृति के आख्याता हैं। उन्होंने अपने काव्य जीवन में सर्वत्र इस भारतीयता का निर्वाह किया है। मल्लिका का बदला हुआ जीवन देखकर और उसे विलोम की पत्नी के रूप में पाकर उसका सपना राख का ढेर अवश्य बन जाता है किंतु कवि अपनी मर्यादा को समझते हुए स्वीकार करता है। "देख रहा हूँ कि समय अधिक शक्तिशाली है क्योंकि वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।" इतना कह कर वे अज्ञात दिशा में अपने कदमों को मोड़ देते है। यह प्रेम है जिसकी तड़पन में कवि ने उच्च कोटि के नाटक और महाकाव्य लिखे, यह वही प्रेम है जिसे पाकर वे दुनिया की हर बहुमूल्य वस्तु को तुच्छ समझते हैं और प्रेम के लिए वे ही मल्लिका से मिलने कश्मीर का सुख त्यागकर दौड़े चले आते हैं। प्रेम ही उन्हें अज्ञात के मार्ग पर ले चलता है।

कालिदास, मल्लिका की इस छोटी सी प्रेमकथा को तीन अंकों का विस्तार दिया गया है। छोटी–छोटी घटनाएं लहर की तरह उठती है और फिर कथा की मुख्य धारा में विलीन हो जाती हैं। दूसरे अंक में युवती शोधकर्त्री और दो राजकर्मचारियों का विदूषकीय वार्तालाप जितना समय लेता है उस अनुपात में उसकी उपयोगिता और उपलब्धि साबित नहीं होती। वस्तुविन्यास के आधार पर कथ्य के निम्न बिन्दु हो सकते हैं –

1 प्रथम धरातल पर एक कथानक प्रेम के अशरीरी सौंदर्य का निरूपण है।

2 मिट्टी का मोह एक दूसरा काथ्य हो सकता है, कथावस्तु से इसके भी कथ्य का संकेत मिलता है।

3 इच्छा और समय के द्वन्द्व का चित्रण पूरे नायक की घटनाओं के माध्यम से किया गया है।

4 कालिदास के माध्यम से एक साहित्यकार की आत्मयातना की कथा कही जा सकती थी। 'आषाढ़ का एक दिन' काव्यत्व की दृष्टि से एक उत्कृष्ट रचना है।

'लहरों के राजहंस' में कथ्य विश्लेषण

'लहरों के राजहंस' नाटक को घटनाप्रधान न कह कर मानसिक अंर्तद्वंद्वों का नाटक कहा जाना चाहिए, क्योंकि इस नाटक में घटनाओं का उपयोग बहुत कम हुआ है और जिन घटनाओं का प्रयोग हुआ है उनका प्रयोजन चरित्रों में उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियाओं का अंकन है। पूरे नाटक में कथा नाम की कोई वस्तु नहीं है पर एक कथानक है जिसकी पृष्ठभूमि से एक कथा का एहसास जुड़ा है।

तीन अंकों के इस नाटक में तीन प्रमुख घटनाएं है :– प्रथम अंक में सुंदरी द्वारा कामोत्सव का आयोजन और उसकी विफलता, द्वितीय अंक में सुंदरी द्वारा विफलता से उत्पन्न कटुता और क्षोभ की मनःस्थिति से उभरकर पुनः अपने को सामान्य बनाने की कोशिश करना, पर बुद्ध के भिक्षा हेतु आने और बिना भिक्षा पाए वापिस चले जाने की सूचना से संकुचित और लज्जित हो उठे नन्द का परिमार्जन हेतु बुद्ध से मिलने के लिए जाना। तृतीय अंक में बुद्ध द्वारा जबरदस्ती दीक्षित कर दिए गए नन्द का वापिस घर लौटना और सुंदरी द्वारा तिरस्कृत होकर पुनः वापिस लौट जाना– इस नाटक की तीन मुख्य घटनाएं हैं।

पहली रात की घटना कामोत्सव की है, दूसरी सुबह और दिन की घटना, सुंदरी द्वारा अपने को संभालने की कोशिश, नंद का बौद्ध धर्म से दिक्षित होकर यहां–वहां भटकना और जंगल में बाघ से संघर्ष के बाद घर लौटना और लौटने के बाद सुंदरी के साथ उलझन भरी बातचीत होती है। अतः कहने को छत्तीस घंटे का समय है, परंतु घटनाएं उत्सव की रात्री से दूसरी सुबह के बीच की है। इसमें एक स्त्री का अपने पर से, एक पुरूष का अपनी स्त्री पर से विश्वास टूटता है, एक स्त्री अकेली हो जाती है। यह जीवन की वास्तविक विड़म्बना भी है। एक–दूसरे के साथ रहते हुए भी कितना कुछ अनकहा रह जाता है।

प्रथम अंक का दृश्य जब खुलता है तो हम पाते हैं कि सुंदरी के राजभवन के सारे कर्मचारी व्यस्त भाव से काम में जुटे हैं। बाते करती सुंदरी अलका के साथ मंच पर आती है तो पता चलता है कि कामोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यहीं से अपरिचय और अलगाव पैदा होता है। नंद ने सबकुछ जानकर भी सुंदरी को उत्सव के आयोजन से इसलिए नहीं रोका कि उसका उत्साह टूटेगा। यदि वह बता देता तो शायद सुंदरी अपमान महसूस न करती। प्रथम अंक के बाद क्षणिक अंतराल है जिसमें कुछ समय बीतने का संकेत है। दूसरे अंक में रात्रि के अंतिम प्रहर में सुन्दरी झूले में अस्त व्यस्त सी सोई हुई है और नंद कमरे में इधर–उधर टहलता है। सुंदरी जब सोकर उठती है तो वह स्वयं को सामान्य बनाने की समझदारी करती है। वह रात के अशोभनीय व्यवहार के लिए क्षमा मांगती है। जिसके कारण भावना का प्रवाह नंद के हृदय में उठता है और जिसमें सारा कुछ बह जाता है। प्रातःकाल सुंदरी की सहमति से बुद्ध से मिलने के लिए नंद जाते हैं और उसके साथ ही दूसरा अंक पूरा होता है।

तीसरे अंक का दृश्य जब खुलता है तो पता चलता है कि दिन बीत चुका है। नंद अभी तक वापिस नहीं लौटे। सुंदरी चिंतित है, तभी उसे मालूम होता है कि तमाम विरोधों के बावजूद बुद्ध ने नंद को जबरदस्ती दीक्षित कर दिया और केश मुंडवा दिए, फिर भी उन्होंने भिक्षा पात्र लेने से इनकार कर दिया। सुंदरी की जब आंख खुलती है तो सामने सिर मुंडाए क्षत–विक्षत नंद खड़े हैं और परिवर्तित रूप में इस प्रकार सुंदरी का विश्वास तोड़कर वह उसे चोट पहुंचाते हैं। नंद मानता है कि वह केवल उतना सा नहीं है जितना सुंदरी उसे देखती–मानती है। इसके अलावा भी वह कुछ है। नंद की यह स्पष्ट घोषणा है कि वह किसी का विश्वास ओढ़कर नहीं जीना चाहता। वह कुछ पल के लिए स्तब्ध–सा खड़ा सुंदरी को देखकर रह जाता है, फिर आहत भाव से सामने के द्वार से चला जाता है।

नंद के समझने और समझाने की कोशिश पर सुंदरी का हठ अधिक प्रबल रहा, वह सोचती–समझती है कि वही अंतिम है। समझदारी से समझौता उसकी प्रकृति के विपरित था, अन्यथा नंद को वापस लौटना नहीं पड़ता। कथ्य की दृष्टि से निम्न बिन्दु हमारे समक्ष प्रस्तुत होते हैं–

1 नाटककार वस्तुविधान के द्वारा यह कहना चाहता है कि दाम्पत्य कलह गंभीर रूप धारण करता है।

2 बंधन को जाने बिना मुक्ति संभव नहीं। सुंदरी बंधन है और बुद्ध मुक्ति।

3 नाटक का मूल द्वन्द्व पार्थिव–अपार्थिव मूल्यों का द्वंद्व है कि पृथ्वी या पार्थिव मूल्यों के प्रतीक के रूप में सुंदरी पुरूष (नंद) और उसकी चेतना को बान्धे रखना चाहती है।

4 सुंदरी और बुद्ध दो व्यक्ति या व्यक्तित्व नहीं, दो जीवन दृष्टियाँ हैं जिसके प्रभाव से नंद का मन निरंतर आंदोलित है।

5 स्त्री–पुरूष संबंधों के विराट फलक पर नंद और सुंदरी दम्पति के पारस्परिक आकर्षण और विकर्षण का एक रूप प्रस्तुत करना इस नाटक का स्थूल कथ्य है।

6 योग और भोग के बीच का संघर्ष, बंधन से मुक्ति का संघर्ष अथवा मोहन राकेश के शब्दों में मूल्यों का द्वंद्व है।

मोहन राकेश ने हिन्दी नाटक और रंगमंचीय प्रदर्शन के इतिहास में अपनी एक पहचान कायम की है। 'लहरों के राजहंस' को इस अंतिम रूप तक ले जाने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ी और वह परिश्रम निरर्थक नहीं गया है। इस नाटक ने अपनी क्षमता और प्रभावशीलता के कारण राकेश की प्रतिष्ठा, एक नाटककार के रूप में स्थाई कर दी थी।

'आधे–अधूरे' नाटक में कथ्य विश्लेषण

'आधे–अधूरे' मोहन राकेश का तीसरा नाटक है। यहां तक आते–आते उनकी दृष्टि बहुत साफ हो गई थी। समकालीन जीवन के विसंगत रूप को पूर्णता के साथ उभारने की चेष्टा मोहन राकेश ने इस नाटक के माध्यम से पूर्ण की है। यह नाटक 'आधे–अधूरे' शीर्षक के मुताबिक अधूरे व्यक्तियों के आत्मसाक्षात्कार का नाटक है। पूर्णता की तलाश में मनुष्य हमेशा भटकता रहता है। उन्होंने इस नाटक के माध्यम से स्त्री–पुरूष संबंधों का विवेचन विश्लेषण किया है।

आजादी के बाद जो अधिकार नारियों को मिले उससे मध्य वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ। सावित्री जैसी एक स्त्री अगर नौकरी करके परिवार को चलाने लगती है तो उसको पारिवारिक स्तर पर सबसे अधिक प्रहार झेलने पड़ते हैं। इस नाटक की नायिका सावित्री महानगरीय परिवेश से संबंध रखती है, इसलिए बिखराव, टूटन, संबंधों को ढोए चलने की विवशता और यातना सबसे ज्यादा उसे ही भोगनी पड़ती है क्योंकि महानगरीय जीवन में बदलाव आना शुरू हो गया था।

यह पीड़ा केवल स्त्री की नहीं, बल्कि पुरूषों को भी भोगनी पड़ती है। परिवार के सभी पुर्जे घिस गए हैं और सावित्री भी उन्हें बदलना चाहती है, पर आखिरकार उसे उसी में फिट होना पड़ता है क्योंकि आदमी मशीन जैसा नहीं।

आजादी के बाद महानगरीय सभ्यता संस्कृति का विकास तो हुआ परंतु आदमी औद्योगिकीकरण की प्रकृति के कारण धीरे–धीरे भीड़ में बदलता गया। ऐसे में सावित्री जैसी स्त्री अगर सिघांनिया जैसे पुरूषों की रसिकता झेल लेती है तो कोई बड़ी बात नहीं। अशोक अगर बेकारी के दिनों में उद्योग सेंटर वाली पूर्णा के पीछे जूते चटकाता फिरता है तो यह तलाश–सनातन पुरूष की नारी की तलाश है। मूल समस्या स्त्री–पुरूष की, नर–नारी के शाश्वत संबंधों की है।

स्त्री–पुरूष दोनों स्वतंत्र हैं परंतु पृथकता के बावजूद एक दूसरे के प्रति समर्पित होने के लिए विवश है। यह कथा केवल नर–नारी संबंधों की नहीं बल्कि इससे भी गहरे उस आंतरिक लगाव और तनाव का भी संकेत है, स्त्री–पुरूष की जब दो विपरीत प्रकृतियाँ मिलती हैं तो एक नई प्रवृत्ति की सृष्टि होती है। इस पारस्परिक समर्पण और मिलन में उनका अहम विलय नहीं होता है। उनमें संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है पंरतु दोनों एक–दूसरे के बिना अपूर्ण है। दोनों एक–दूसरे की पूर्णता में पूर्णता पाना चाहते हैं और जब–जब संपूर्णता की स्थिति आती है, ठीक उसी समय पर दोनों का व्यक्तित्व बीच में आ जाता है। स्त्री–पुरूष एक–दूसरे को पाने के लिए न जाने कितने त्याग और बलिदान करते हैं, परंतु दोनों के मिलन पर संघर्ष और विरोध की चिंगारियां छूटने लगती हैं।

सावित्री ने भी लम्बी तलाश के बाद महेन्द्रनाथ को पाया और 22 वर्षों के वैवाहिक जीवन में हमेशा अधूरेपन को महसूस करती रही। जब भी उसने महेन्द्रनाथ को छोड़ना चाहा, हमेशा उसे समझौता करना पड़ा। महेन्द्रनाथ ने भी सावित्री को प्रसन्न करने के लिए अपने को तबाह कर डाला और उसे छोड़ने की कोशिश भी की। उसने सावित्री से समर्पण की कल्पना की थी, परंतु उसे मिला नहीं उसे मिला केवल आधिपत्य।

'आधे–अधूरे' में संबंधों का तनाव बना रहता है। इसके पीछे नाटककार का उद्देश्य यह रहा हैं कि वह व्यक्तित्व और संबंधों, दोनों के अधूरेपन को आजाद कर सके। इस बात को कहने के लिए नाटककार ने जिस जीवन–स्थिति का चुनाव और निर्माण किया है, वह अपने–आप में भी कुछ कह जाती है, उसे पारिवारिक विघटन की दिशा का चित्रण, बदलते हुए आर्थिक मूल्यों के संदर्भ में संबंधों के बदलते हुए मूल्यों का परीक्षण, परिस्थितियों के समक्ष आदमी की पराजय, मानवीय संतोष का अधूरापन और कामनाओं की अतृप्ति का अंकन, आधुनिक मध्यवर्गीय परिवार की गाथा, अभावग्रस्तता और रूढ़ संस्कारों के बीच छटपटाती हुई मानवता या मानवीय अनुभव की समानता का निदर्शन आदि कथ्यों के रूप में भी चित्रित किया गया है।

इस नाटक का मुख्य कथ्य नर–नारी सम्बन्धों और नियति का हस्तक्षेप तथा इस सबके बीच उभरने वाले जीवन के अधूरेपन का, व्यक्तित्व के अधूरेपन का एहसास कराना, वस्तुतः नाटक का मूल कथ्य है। 'आधे–अधूरे' की दृष्टि वहां महत्वपूर्ण है जहां सावित्री–महेन्द्रनाथ के जीवन की घटनाएं केवल उनके जीवन की बात न रहकर समकालीन के विभिन्न आयामों को, आज के जीवन की विसंगतियों को, मध्यवर्गीय जीवन स्थिति की अर्मूत विवशताओं और यातनाओं को अभिव्यक्ति देने लगती है। इसके साथ–साथ आज की युवा पीढ़ी की दिग्भ्रांति, आक्रोश, निष्क्रिय जीवन, बेकारी की मानसिकता आदि को दर्शाने की कोशिश भी की है। इससे भी आगे बिन्नी जैसी लड़की के माध्यम से यौन उत्सुकता के जरिए जीवन की विसंगतियों से पलायन की दिशा की ओर संकेत भी है।

निष्कर्ष :–

'आषाढ़ का एक दिन' में काव्यत्व की मात्रा अधिक है, इसलिए मूलतः पढ़ा जाने वाला नाटक है। 'लहरों के राजहंस' में बौद्धिकता अधिक है इसलिए पढ़ाया जाने वाला नाटक है और 'आधे–अधूरे' में नाट्यानुभूति की तीव्रता है इसलिए यह नाटक देखने–करने वाला नाटक है। इन्होंने हिन्दी नाटकों को बहुत आगे बढ़ाया है और जड़ता के सारे बंधनों को तोड़ा है। जहां वे नवीन प्रयोग करते हैं वहां भी उनकी आकांक्षाओं का ही अंर्तद्वंद्व होता है।

मोहन राकेश अपने समकालीन हिन्दी नाटककारों की चिन्तन मानसिकता में अग्रगण्य है, इन्होंने हिन्दी नाटकों को एक रंगमंच प्रदान किया है जो इनका अपना था। राकेश ने इन तीन नाटकों के रूप में अपनी मौलिक देन हिन्दी नाटक और रंगमंच जगत को दी है और यह नाटक परिपक्व रचनाएं होने के कारण उनकी सभी रचनात्मक उपलब्धियों की प्रतिनिधि रचनाएं बन जाती हैं। परवर्ती नाट्य लेखक को इस नाटक से दिशा और दृष्टि मिली है, इस दृष्टि से भी राकेश महत्वपूर्ण साबित होते हैं।

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी अगर तीन कहानियों को लिखकर अमर हो गए हैं तो राकेश भी तीन नाटक लिखकर अमर हो गए हैं।

शोध का महत्वः–

शोध अर्थात् अन्वेषण या नए विषय की खोज। हम कह सकते हैं कि नए तथ्यों को एक नए रूप में प्रस्तुत करना ही शोध है। कुछ तथ्य ऐसे होते हैं जो एक जिज्ञासु शोधकर्ता हमारे सामने प्रस्तुत करने का उल्लेखनीय प्रयास करता है। ऐसा ही सुक्ष्म यत्न मैंने अपने इस शोध पत्र के माध्यम से करने का प्रयास किया है।

मैंने मोहन राकेश के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं नाटकों का अध्ययन करके उनके आधुनिकता बोध, रंग शिल्प के विविध आयामों को नए संदर्भों में खोजने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है।

शोध का महत्व इसी से जाना जा सकता है कि इस शोध पत्र के द्वारा कितने तथ्य जो मोहन राकेश के विषय में अनबुझे या अनजाने रह गए थे, उन्हें नए अर्थ एवं अभिव्यक्ति देने का मैंने सुक्ष्म दुस्साहस किया है।

संदर्भ सूची

लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1 डॉ॰ नरनारायण राम	रंगशिल्पी मोहन राकेश	कादम्बरी प्रकाशन 5451 नई दिल्ली, पृ॰ 120, 135
2 डॉ॰ गोविन्द चाचक	आधुनिक नाटक का मसीहा	
3 जयदेव तनेजा	लहरों के राजहंस : विविध आयाम	पृ॰ 20
4 डॉ॰ रामकुमार गुप्त	हिन्दी नाटक के प्रमुख हस्ताक्षर	अमर प्रकाशन, मथुरा, पृ॰ 208
5 डॉ॰ गिरीश रस्तोगी	मोहन राकेश व उनके नाटक	
6 पुनीत कुसुम	आधे–अधूरे अपूर्ण महत्वकांक्षाओं की कलह	
7 मोहन राकेश	लहरों के राजहंस	
8 मोहन राकेश	आधे–अधूरे	
9 मोहन राकेश	आषाढ़ का एक दिन	